Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VII July 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

फिल्म मीडिया और हिन्दी

प्रा. डॉ. विजयसिंह ठाकुर
- हिंदी विभागाध्यक्ष,
यशवंत महाविद्यालय,
नांदेड.

आज की हिन्दी फिल्में देश - विदेश में कमाई के नए-नए रिकॉर्ड तोड रही है | फिल्मों के इस बढते हुए मुनाफे के पीछे हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है | आज दुनिया के कोने-कोने में फिल्मों के माध्यम से हिन्दी फैल रही है | विशेष करके उन देशों में जहाँ हिन्दी भाषी लोक रहते है वहाँ पर भारतीयों के साथ-साथ अन्य लोग भी हिन्दी फिल्मों की तरफ आकर्षित होते है | क्योंकि, वे फिल्में सम्पूर्ण भारत का चेहरा लोगों के सामने प्रस्तुत करती है | सच्चाई भी यही है, चाहे वह साहित्य हो या सिनेमा जिस परिवेश का चेहरा लोगों के सामने प्रस्तुत करती है | सच्चाई भी यही है, चाहे वह साहित्य हो या सिनेमा जिस परिवेश पर आधारित होगा वहाँ की संस्कृति, वहाँ का समाज, वहाँ की परमप्रायें, लोक प्रचलित मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ आदि सब कुछ विद्यमान रहता है | वैसे मुझे लगता है कि सिनेमा भी एक प्रकार का साहित्य ही है | जिसमें कथा वस्तु के माध्यम से समाज का परिवेश झलकता है | जिस पर वह कथावस्तु आधारित होती है तो | इस रुप में जो भारत के समाज को जानना-परखना या शोधकर्य करना चाहता है उसे हिन्दी सिनेमा का विश्लेषण करना ही पडता है |

संचार माध्यमों में सिनेमा का विशेष स्थान होता है | हिन्दी चित्रों का विश्व भर में लोग बडे चाव से देखते हे | इन फिल्मों के जरिये भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय सभी को होता है | निर्माता-निर्देशक एक हफ्ते में ही दुगुना, तिगुना पैसे कमा रहे हैं | इसका कारण विश्व भर में हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार है | बाजारीकरण के कारण हिंदी भाषा का स्वरुप अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं से मिला हुआ दिखाई दे रहा है |

संगणक का उपयोग आजकल ज्यादा हो रहा है | बिजली का बिल, टेलिफोन, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के बिल, यातायात क्षेत्र में, शोध संस्थान, उद्योग जगत, विज्ञान इत्यादि क्षेत्रों में अध्ययन की सुविधा के लिए हिन्दी में संगणक प्रौद्योगिकी का व्यापक स्तर पर प्रयोग कर रहे है | वाणिज्य क्षेत्र में अपने उत्पादनों को अधिक बिकने के लिए विभिन्न कंपनियाँ अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रही है | जब से विज्ञापन हिंदी में प्रसारित हो रहे है तब से उत्पादनों का बिकने का प्रतिशत बढ गया है |

इंटरनेट ने विश्व को एक छोटा सा गाँव बनाया है | इसके व्दारा हम हिंदी में ई - मेल भेज सकते है | अपने आत्मीयों से ऑनलाइन मिलकर बात कर सकते है, समाचार पत्र देखा जा सकता है, अपने लेखों को, साहित्य को, किताबों को इंटरनेट पर लगा सकते हैं | अपने मन की बातों को ' ब्लाग ' के जरिए व्यक्त कर सकते है | कई हिंदी भाषी इंटरनेट का उपयोग हिन्दी में कर रहे हैं | इसके व्दारा समय का सदुपयोग हो रहा है | नेट के व्दारा रेल्वे टिकट बुकिंग से आम जनता के लिए अंतर्जाल के उपयोग की सुविधा बढ गई है | आजकल हिंदी में ऑनलाईन परीक्षा देने की सुविधा भी है | हिंदी भाषा के विकास के लिए यह एक नई दिशा | हिंदी को विश्व भाषा बनाने का श्रेय संचार माध्यमों के साथ - साथ प्रवासी भारतीयों को जाता है | विदेशों में हिन्दी में अध्ययन के साथ - साथ अनुसंधान भी हो रहा है | विश्व हिन्दी

सम्मेलनों ने हिंदी को प्रचारित करने में बहुत बडी भूमिका निभाई है | वे सम्मलेन विश्व में फैले हिंदी प्रेमियों और विव्दानों को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर राष्ट्र भाषा हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है |

सिनेमा हमारे समय की सशक्त कला है और इसे संपूर्ण कला कहें तो अतिसयोक्ति नहीं होगी | बीसवी शताब्दी के ज्ञान- विज्ञान की यह सबसे महत्वपूर्ण देन है | इसमें नाटक, संगीत, काव्य, उपन्यास आदि का अभ्दुत समन्वय होता है | साहित्य की तरह यह व्यक्तिगत प्रयास नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयास है | फिल्म में कलाकार को स्वतंत्रता भी है लेकिन स्वतंत्रता को सही ढग से ही प्रयोग नहीं कर रहे अथवा दुरुपयोग कर रहे है |

फिल्म का संसार बहुत बडा है | अच्छी फिल्में साहित्य और कला का आदर्श समन्वय स्थापित करती है | फिल्में सामाजिक नैतिकता स्वीकार भी करती है, उन्हें तोडती भी है, अपने समाज के प्रति उत्तरदायी भी है | समाज की तरह फिल्मों का वर्ग चरित्रप्रधान होता है | बिना फिल्मों को गंभीरता से लिए हम अच्छी फिल्मों की कल्पना नहीं कर सकते ये दुर्भाग्य ही है कि आज हमारी फिल्म बनानेवाले निर्देशक अपने समाज और साहित्य से कट गय हैं | आवश्यकता इस बात की है हिन्दी फिल्मकार और हिन्दी के साहित्यकार इक्कीसवीं शताब्दी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सिनेमा और साहित्य की अंतरंगता को बढा रहे हैं | इस दिशा में आपसी अंतरंगता, एक दूसरे के प्रति उत्सुकता और संलग्नता का भाव ही सिनेमा और साहित्य को एक दूसरे के समीप ला सकेगा |

सिनेमा और साहित्य का संबंध इतना पुराना और इतना गहरा है कि संसार भर में साहित्यिक रचनाओं पर फिल्में बनती रहती है | संसार भर में साहित्यिक ने पटकथा, संवाद एवं गीत लेखन ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है | अनेक साहित्यकार तो फिल्मों में अभिनव के क्षेत्र में भी सक्रिय हुए है | हिन्दी सिनेमा भी अपवाद नहीं है | हिन्दी सिनेमा के साथ हिन्दी साहित्य के पारस्परिक सरोकारों का इतिहास बहुत पुराना है | इसका कारण यही है कि सिनेमा अपनी पटकथा, संवादों और गीतों की शक्ल में भाषा- साहित्य का हिस्सा ही होता है | हिन्दी सिनेमा की विकास-यात्रा में इन सभी उपकरणों का सार्थक उपयोग हिन्दी सात्यि के साथ सिनेमा के रिश्तों को सघन बनाता है | ऐसा प्रारंभ से ही होता आया है | प्रारंभिक हिन्दी फिल्मों में रहस्य, रोमांच तथा चमत्कार -मूलक अलौकिक तत्वों की प्रधानता रहती थी | हिन्दी का प्रारंभिक कथा सहित्य ऐयारी लिस्मी कथा जादूगरी के किस्से-कहनियों को फारसी तथा अरबी के फसानों से ग्रहण किया, जो वहाँ परंपरा से प्रचलित थे | अलिफ लैला, गुल बकावली, गुल सनोवर, तिलिस्म होशरुबा और चहार दरवेश के किस्सों को आधार बना कर चालीस के दशक में अनेक फिल्मों बनीं | बाब के दशकों तक ऐसी फिल्में बनती रहीं, जिनसे जनसाधारण का मनोरंजन होता रहा | जयन्त देसाई ने 1953 में ' अरेबियन नाईट्स ' के आधार पर ' हजार रातें ' बनाई तो उसी वर्ष ' गुल सनोवर 'की कहानी भी रब पहले पर्दे रक पेश की गई | अली बाबा चालिस चोर, लादीन, हातिमताई जैसी फिल्में रहस्य और रोमांच के इसी संसार कि यात्रा कराती हैं |

संदर्भ :-

1. लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, जवरीमल्ल पारख, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, सं.2001.
2. संचार माध्यम लेखन, गौराशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं.2006.
3. वर्तमान साहित्य : सदी का सिनेमा, सं कमला प्रसाद, अतिथि सं, प्रहलाद अग्रवाल, हिन्दी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, साहित्य भंडार, इलाबादा |
4. जनसंचार माध्यमोंमें हिन्दी - चंद्रकुमार |
5. वैश्विकता के संदर्भ में हिन्दी, डॉ. शैलजा पाटील |